Arjun N Varun Presents

राम-रहीम और ब्लैक फाइल

(डबल सीक्रेट एजेण्ट ००½ राम-रहीम सीरीज)

लेखक : बिमल चटर्जी

चित्रकार : दिलीप कदम, हरिश्चंद्र चव्हाण, त्रिशूल कॉमिको.
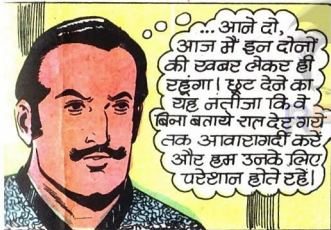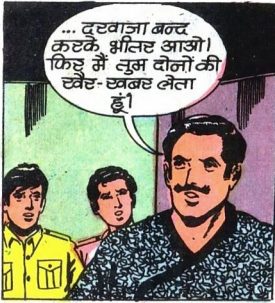
...दरवाज़ा बन्द करके भीतर आओ। फिर मैं तुम दोनों की खैर-खबर लेता हूं।
लगता है, आज हमारी खैर नहीं है।
बिल्कुल, डैडी काफी गुस्से में हैं।
कुछ देर बाद—
मैं पूछता हूं, यह तुम दोनों रात देर गये तक कहां आवारागर्दी करते रहते हो। क्या तुम्हें अपनी मम्मी और घर की इज्जत की कोई परवाह नहीं। किसी का कोई भय नहीं।
अरे! आ गये तुम दोनों।
सॉरी डैडी। दरअसल हम दोनों कुछ दोस्तों के जोर देने पर उनके साथ नाइट शो देखने चले गये थे। लौटते वक्त मोटर साइकिल खराब हो गई, इसलिए देर हो गई।
हां अंकल! विश्वास न हो तो यह देखिये टिकट।
यदि ऐसी बात थी तो कहीं से फोन कर दिया होता बेटा। कम-से-कम हम तुम्हारे लिए चिंतित तो न रहते...
...आज के बिगड़ते हालातों से तुम दोनों भी अच्छी तरह से परिचित हो। शहर में हर पल कुछ-न-कुछ घटता ही रहता है।

आंटी! हमने फोन करने की काफी कोशिश की थी, लेकिन नम्बर ही नहीं मिला। हो सकता है, हमारे घर की लाइन में कोई खराबी आ गई हो।
चुप रहो...
...मैं बेकार की बहानेबाजी नहीं सुनना चाहता। यह मेरी तुम दोनों को आखिरी चेतावनी है। अगर आज के बाद तुम रात को नौ बजे के बाद घर से बिना बताये गैर हाज़िर रहे तो मुझसे बुरा कोई और नहीं होगा। समझे।
ज... जी!

राधा, तुम इन्हें खाना गर्म करके खिला दो। मैं सोने जा रहा हूं।
जी, बहुत अच्छा!

थैंक्स गॉड! जान बच गई।

चलो, तुम दोनों डाइनिंग रूम में चलकर बैठो। मैं खाना गर्म करके लाती हूं।
थैंक्यू मम्मी!

उसके बाद राम-रहीम खाना खाकर सो गये।
अगले दिन सुबह नाश्ते की टेबल पर-
डैडी! इस बार आप कितने दिन की छुट्टियों पर आये हैं?
दस दिन की छुट्टी पर! वैसे मुझे यहां एक विशेष काम भी है।
ओह!
तभी-
ट्रिन-ट्रिन-ट्रिन!
ओह! फोन!
आप बैठिये डैडी! मैं देखता हूं।
हैलो! राम स्पीकिंग फ्रॉम राघव हाउस।
राम, मैं तुम्हारा चीफ अंकल बोल रहा हूं।
ओह! अंकल आप! कहिये, कैसे फोन किया?
तुमसे एक जरूरी काम है। फिलहाल क्या कर रहे हो?

नाश्ता कर रहा था?
ठीक है। नाश्ता करने के बाद रहीम और तुम सीधे ऑफिस चले आओ। बाकी बातें यहीं होंगी।
ओ. के. अंकल! बॉय!
फिर राम ने सम्बन्धविच्छेद कर रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।
किसका फोन था बेटे?
मुखर्जी अंकल का। उन्होंने मुझे और रहीम को अपने ऑफिस में बुलाया है।
क्यों?
यह तो उन्होंने बताया नहीं। कह रहे थे, वहीं बतायेंगे।
राम का उत्तर सुन कर्नल राघव का चेहरा गम्भीर हो उठा।
राम, क्या तुम मुझे बता सकते हो कि तुम्हारे मुखर्जी अंकल तुममें और रहीम में इतनी दिलचस्पी क्यों रखते हैं!
यस डैडी! मेरे विचार से तो उनकी दिलचस्पी का कारण हम दोनों के प्रति उनका असीम प्यार ही हो सकता है।

बकवास! मैं उनकी असलियत अच्छी तरह से जानता हूं। वे डबल सीक्रेट सर्विस के चीफ हैं और उनका किसी में इतनी दिलचस्पी लेने का कारण महज़ प्यार ही नहीं हो सकता। मैं सच्चाई जानना चाहता हूं।
सच्चाई यही है डैडी! वे आपके गहरे दोस्त हैं। इसी कारण हमें अपने बच्चों की तरह प्यार करते हैं।

हुम्म! कम्बख्त किसी भी तरह सच्चाई बताने के लिए तैयार नहीं। खैर, मैं भी एक-न-एक दिन यह राज जानकर ही रहूंगा।
कर्नल राघव इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ थे कि राम-रहीम बाल सीक्रेट सर्विस के सबसे चुस्त और चालाक डबल एजेन्ट हैं।

नाश्ता करने के पश्चात राम-रहीम फटाफट तैयार हुए और मोटर साइकिल पर सवार होकर सीक्रेट सर्विस के मुख्यालय की ओर चल दिये।

लगभग बीस मिनट बाद वे चीफ मुखर्जी के ऑफिस में उनके सामने बैठे थे।
बताइये चीफ! आपने हमें अचानक कैसे याद किया?

आने वाले एक खतरे से आगाह व सूचित करने के लिये।
क्या मतलब?

मुझे विश्वास है कि तुम दुनिया के खतरनाक एवं कुख्यात मुजरिम शाकाल को अभी तक नहीं भूले होगे।
जी हां, हमने उस जैसा दुःसाहसी अपराधी आज तक नहीं देखा। वह आज से पांच साल पहले हमारे एक पड़ोसी देश के इशारे पर हमारे देश में कत्ल-ए-आम मचाने आया था, लेकिन...।
लेकिन अन्त में वह तुम दोनों के कारण अपनी जान बचाकर भागने को विवश हुआ था, और हेलीकॉप्टर से समुद्र में कूदकर आत्महत्या कर बैठा था।
जी हां, बिल्कुल ठीक कहा आपने। लेकिन पांच साल बाद आज अचानक आपने उसका जिक्र क्यों छेड़ा?
इसलिए कि वास्तव में शाकाल मरा नहीं था, बल्कि अभी भी जीवित है। और हमारे देश में विनाश लीला करने की तैयारी कर रहा है।
क्याऽऽऽ?
यह आप क्या कह रहे हैं चीफ।

मैं ठीक ही कह रहा हूं डबल एजेण्ट। कल रात मुझे उसका फोन आया था। उसने मुझे धमकी दी है कि वह न केवल तुम दोनों से बदला लेगा, बल्कि हमारे देश में खून की नदियां बहा देगा।
ओह!
चीफ! शाकाल से सम्बन्धित फाइल तो आपके पास होगी?
हां, लेकिन उस फाइल का तुम क्या करोगे? शाकाल के बारे में तो तुम दोनों सबकुछ जानते ही हो।
काफी अरसा हो गया है। अब तो हमें उसकी शक्ल भी याद नहीं रही। इसलिए अच्छा होगा कि एक बार वह फाइल हमें दिखा दें, ताकि हम सही ढंग से उसकी खोजबीन कर सकें।
आश्चर्य है! तुम किसी खतरनाक अपराधी की शक्ल भूल जाओ, मुझे विश्वास नहीं होता। खैर...
...उसकी ब्लैक फाइल मैं कल तुम्हें तुम्हारे घर पर दे दूंगा।
कल घर पर ही क्यों? अभी क्यों नहीं चीफ?

राम! कहीं वास्तव में ही तो तुम्हारी याददाश्त कमजोर नहीं हो गई...
...तुम अच्छी तरह जानते हो कि हर उस खूंखार मुजरिम की फाइल हमारे मुख्यालय के स्ट्रांग रूम में रहती है, जिसका केस हमारे विभाग को सौंपा जाता है...
...और स्ट्रांग रूम का लॉक टाइम सेटिंग के हिसाब से ही खुलता है, यानी रात के ठीक ग्यारह बजे। अतः इस समय मैं उसकी फाइल तुम्हें कैसे दे सकता हूं?
अरे हां, मैं तो भूल ही गया था...
... ठीक है चीफ! मैं कल आकर आपसे वह फाइल ले जाऊंगा।
क्यों भई! क्या कल तुम अपने सत्रहवें जन्म-दिन की दावत पर हमें नहीं बुलाओगे?
हैं! मेरा जन्म-दिन!
क्यों भई! यह तुम अपने जन्म-दिन की बात सुनकर अचानक चौंके क्यों? क्या तुम अपना जन्म-दिन भूल चुके थे?
ऐसी बात नहीं है चीफ! दरअसल, मैं इस साल अपना जन्म-दिन मना नहीं रहा था...

...लेकिन अब सोचता हूं, मना ही डालूं, क्योंकि डैडी भी कल शाम घर आ गये हैं।
गुड! तब मैं अपने प्यारे दोस्त से भी मिल लूंगा।
लेकिन चीफ, अतिथि के रूप में केवल आप ही दावत में होंगे, क्योंकि इतने कम समय में किसी को भी निमंत्रण नहीं दिया जा सकता।
ठीक है। मैं तुम्हारे लोह के डिब्बे में ही फाइल रखता लाऊंगा, ताकि तुम्हारे डैडी को तुम्हारी असलिय का पता न चल सके।
मैं भी यही कहना चाहता था....
... अच्छा चीफ! अब हमें आज्ञा दीजिए! कल शाम हम घर पर आपका इन्तजार करेंगे।
ठीक है।
लेकिन रहीम, तुम आज चुप-चुप से क्यों हो?
चुप ना रहूं तो क्या करूं चीफ! किसी ने मुझे बोलने का मौका ही नहीं दिया। अच्छा चीफ, अब हम चलते हैं।
और चीफ मुखर्जी से विदा लेकर दोनों वहां से चल पड़े।

रास्ते में -
राम भइया, क्या तुम फोन नहीं करोगे।
ओह! ठीक याद दिलाया! आगे एक पब्लिक बूथ है। वहीं से फोन करूंगा।
शीघ्र ही पब्लिक बूथ के सामने पहुंचकर-
तुम यहीं रुको। मैं फोन करके आता हूं।
ठीक है।
हैलो!

हैलो! मैं राम बोल रहा हूं! डबल एजेण्ट!
ओह! कहो!

हम कल रात किसी भी समय अपना काम पूरा करके घर से निकलेंगे।
ठीक है। रास्ते में तुम्हें पिकअप कर लिया जायेगा...

...वैसे तुम्हें ध्यान है ना कि तुम्हें किस-किस मार्ग से होकर गुजरना है?
जी हां! अच्छा, अब मैं फोन रख रहा हूं।
फिर राम सम्बन्धविच्छेद कर...
...बूथ से बाहर निकल आया।

जल्दी ही–
क्या रहा ?
मैंने कह दिया है कि कल रात हमारी सिरदर्दी खत्म हो जायेगी।
गुड !
घर पहुंचने पर –
बेटे ! क्यों बुलाया था तुम्हारे मुखर्जी अंकल ने ?
मेरे जन्मदिन का प्रोग्राम जानने के लिये। डैडी, शायद वे इस बार मुझे कोई बढ़िया तोहफा देना चाहते हैं।
लेकिन तुम्हारी मम्मी से तो मुझे यह पता चला है कि मेरे न होने की वजह से तुमने इस बार अपना जन्म-दिन मनाने का विचार त्याग दिया था। इसलिए तुमने कोई तैयारी भी नहीं की।
हां डैडी, परन्तु अब जब आप आ गये हैं, तो मैंने अपना जन्म-दिन मनाने का फैसला कर लिया है। परन्तु मेहमानों के रूप में केवल मुखर्जी अंकल ही आयेंगे। वे आपसे मिलना चाहते हैं, इसलिए मैंने उन्हें डिनर पर बुला लिया है।

यह तुमने ठीक किया। अपने मित्र से मिलकर मुझे भी बड़ी खुशी होगी। आओ, अब चलकर खाना खा लें।
जी, चलिए।
आओ रहीम।

भई, एक लम्बे अरसे के बाद तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है।
मुझे भी बहुत खुशी हो रही है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

भई, अब अन्दर भी आने के लिये कहोगे या यहीं से विदा कर दोगे।
अरे भई, नहीं। आओ, भीतर आओ।

जन्म-दिन मुबारक हो राम। मेरी तरफ से यह तोहफा स्वीकार करो।
थैंक्यू अंकल!

इस तोहफे को संभालकर रखना राम! बहुत कीमती है।
यह तोहफा कितना किमती है? यह बात आपसे ज्यादा श्राकाल जानता है।
क्या मतलब?

अचानक राम ने गिरगिट की तरह रंग बदला।
मतलब यह कि अब आप चुपचाप अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लें।
व्हाट?
राम!!!
और आप दोनों भी खामोशी से अपने हाथ ऊपर उठा लें।
यह तुम क्या बक रहे हो। तुम्हारा दिमाग तो ठीक है।
???
मेरा रिवॉल्वर रहम करना नहीं जानता कर्नल! अत: चुपचाप आज्ञा का पालन कीजिए।
ओह!
रहीम, यह तुम क्या बक रहे हो?
राम! यदि यह तुम्हारा मजाक है तो ऐसा बेहूदा मजाक मुझे जरा भी पसन्द नहीं। हटाओ अपना रिवॉल्वर मेरे सीने से।
मैं मजाक नह कर रहा मिस्ट मुखर्जी! यदि आपने तुरन्त ही अपने हाथ ऊपर किये तो मैं आप शूट कर दूंगा।

रहीम के स्वर में हिंसकता को महसूस कर सबने अपने हाथ उठा दिये!

राम! मुझे लगता है, तुम्हारा दिमाग फिर गया है। तुम पागल हो गये हो। आखिर इस हरकत का क्या मतलब है? क्या चाहते हो तुम?

सिर्फ इस पैकेट और कर्नल के साथ चुपचाप यहां से निकल जाना चाहता हूं। क्या समझे मिस्टर मुखर्जी!

ओह! नहीं!

ओ नो!

मैं कहती हूं बन्द करो अपनी बकवास!

राम! मेरे विचार से हमें समय नष्ट न करके कर्नल राघव को लेकर यहां से निकल जाना चाहिए।

ठीक कहते हो!

मिस्टर मुखर्जी! यदि आप अपनी जान की खैर चाहते हैं तो कोई भी गलत हरकत करने की चेष्टा मत करना, वरना...!
ओह! आखिर यह राम-रहीम को क्या हो गया है। कहीं ये किसी योजना के अन्तर्गत तो यह सब नाटक नहीं कर रहे।
और कर्नल! यदि आप अपनी पत्नी की सलामती चाहते हैं तो चुपचाप हमारे साथ बाहर चलिये।
मेरे पास समय कम है कर्नल! मैं तीन तक गिनती गिनूंगा। यदि आप चुपचाप हाथ उठाकर दरवाजे की तरफ न बढ़े तो मैं बेहिचक राधादेवी को गोली मार दूंगा।
ओह! ये राम-रहीम हरगिज नहीं हो सकते। जरूर दाल में कुछ काला है, लेकिन मजबूरी तो यह है कि इस स्थिति में कुछ कर भी तो नहीं सकता।
अपनी पत्नी राधा की जिंदगी की खातिर कर्नल राघव राम के रिवॉल्वर की जद में दरवाजे की ओर बढ़ने पर मजबूर हो गये।
गुड! लेकिन ध्यान रहे कर्नल, आपकी छोटी-सी भी भूल आपकी पत्नी के प्राण ले सकती है।
???
!!!

चुपचाप द्वार खोलकर बाहर निकलिये कर्नल।
कम्बख्त, कुछ भी तो करने का मौका नहीं दे रहा है। काफी सतर्क और चालाक लगता है।
खट!
दरवाजा खोलकर कर्नल राघव तो बाहर निकल गये...
...परन्तु, उनके पीछे-पीछे जैसे ही राम ने पैर बाहर निकालना चाहा-
ढिशुम!
आह!

क्या हुआ?

तभी-
धड़ाक!
उफ!

और जब तक वे संभलते-
तुम दोनों का खेल खत्म हो गया शैतान छोकरो!
त... तु... तुम!

यह सब क्या चक्कर है? तुममें असली राम-रहीम कौन हैं?
असली राम-रहीम हम ही हैं डैडी! लेकिन यह सारा चक्कर आपको हम बाद में समझायेंगे! पहले जरा इन दुष्टों की खैर-खबर ले लें...
???
!!!

...फिलहाल आप इन दोनों के रिवॉल्वर कब्जे में कर लें...
...और अंकल, आप अपना तोहफा संभाल लें।
बिल्कुल! वह सिर्फ तुम्हारे लिए है।

राम राघव और चीफ मुखर्जी ने तुरन्त दोनों रिवॉल्वर और केस पर अपना कब्जा कर लिया।
हां तो प्यारो, अब यदि तुम दोनों अपनी हड्डियां नहीं तुड़वाना चाहते तो प्यारे बच्चों की तरह चुपचाप बता दो कि यह सारा चक्कर क्या है?
हरगिज नहीं।

तब तुम्हारे हाथ-पैर जरूर टूटेंगे।
कोशिश कर देखो।

कहने के साथ ही नकली रहीम ने असली राम पर छलांग लगा दी...
???
!!!

...और नकली राम ने असली रहीम पर!

परन्तु उन्हें अपना यह प्रयास बहुत महंगा प
उफ!

आई...ई...ई!

क्यों प्यारो, प्रसाद अच्छा लगा ?
मैं तुझे जिंदा नहीं छोड़ूंगा कुत्ते।
हफ्फ! हफ्फ!

...भी रहीम ने इस बार गजब की फुर्ती दिखाई और–
अ...ह...ह!
ठक्!

खटाक्!
उफ!

उधर नकली राम ने भी असली राम पर ताबड़तोड़ आक्रमण किया।
उफ!

आ...ह...!
असली राम-रहीम को पलभर में धराशायी होते देख कर्नल राघव गर्ज उठे –
मैं कहता हूं रुक जाओ, वरना गोली मार दूंगा।
!!!
???
यह देख असली राम फुर्ती से खड़ा होकर बोल उठा–
नो डैडी, गोली मत चलाना। इनसे हम ही निपटेंगे।
लेकिन...!
???
लेकिन-वेकिन कुछ नहीं डैडी, अब यह मुकाबला हमारी इज्जत का प्रश्न बन गया है।
ओह!

हा-हा-हा! चूहे शेरों का मुकाबला करने चले हैं।

लो संभलो!

लेकिन राम ने न केवल गजब की फुर्ती के साथ स्वयं को उसके आक्रमण से बचाया...

के एक जबरदस्त ठोकर भी उसके चेहरे पर रसीद कर दी।
ठक्!
आई...ई... ई!

उसके बाद राम ने नकली रहीम को संभलने का एक भी मौका नहीं दिया।
हाय!
खटाक!
आई... ई...!
ढिशुम्!
उफ! मर गया।
धड़ाक!
असली रहीम भी नकली राम को घूंसों व ठोकरों पर ले चुका था।
उफ!
ढिशुम्!

खटाक्!
हाय!
आई...ई
... ई!
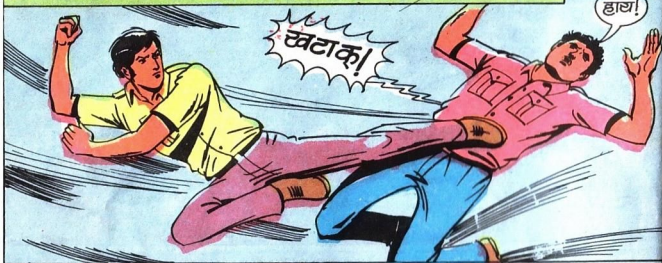
असली राम और नकली रहीम आपस में बुरी तरह गुथ चुके थे।

हफ...हफ...!
हफ...
हफ...!

शीघ्र ही राम को एक मौका मिला और उसने नकली रहीम की
कराटे का एक भरपूर वार किया।

आ...ह...!

नकली रहीम को चकराकर गिरते देख कर्नल राघव, चीफ मुखर्जी व राधादेवी के चेहरे प्रसन्नता से खिल उठे।
वैरी गुड!
वाह!
वो मारा! एक तो गया काम से।
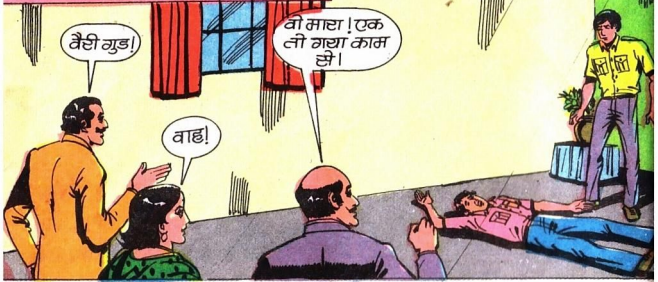
बेहोश हो गया कम्बख्त!

उधर असली रहीम भी नकली राम पर काबू पा चुका था।
गड़प... गड़प...! छोड़ो मुझे, वरना...!
यह फौलादी शिकंजा है बेटे। अब तो यह तुम्हारे प्राण लेने के बाद ही छूटेगा।

आई... ई...
ई...!

नहीं रहीम,
उसे मारना
मत।

तब तक रहीम अपनी पूरी शक्ति का इस्तेमाल कर चुका था।

कड़ाक्!

- नकली राम-रहीम का क्या रहस्य था?
- नकली राम-रहीम कर्नल राघव और ब्लैक फाइल को क्यों और कहां ले जाना चाहते थे? शाकाल के साथ उनका क्या सम्बन्ध था?
- असली राम-रहीम कहां गायब थे और ऐन वक्त पर कैसे अपने घर वापस पहुंच गये थे?
- क्या शाकाल भारत में खून की नदियां बहा सका? वह मरकर फिर कैसे जिन्दा हो गया था?

इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये आगामी सैट में पढ़ें: